दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-7

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2307**

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): Sandeep kumar meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 03/8/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

6	3	1	2	8	1	9

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राम नाम के पटंतरै, देबे कौं कुछ नाहिं।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन माहिं।।

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश डा. श्याम सुंदर दास द्वारा संकलित है। इसमें कबीर गुरु निर्गुण राम की महिमा का वर्णन करते हैं।

व्याख्या :- राम नाम के स्मरण करता हूं, देने कुछ नहीं है। ~~संतोष~~ गुरु भी संतोषी है, मन के अंदर चेतन अवस्था में है।

अर्थात कबीर दास जी निर्गुण राम की महिमा का वर्णन करते हैं। गुरु संतोष के साथ है; वो भी गुरु दक्षिणा की अपेक्षा नहीं करते हैं।

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा सधुक्कड़ी है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. प्रतीकों का प्रयोग हुआ है

3. भाषा में उपमा एवं अलंकारों का भी प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता :- वर्तमान समय में शिक्षक, गुरु जैसे शब्द चरितार्थ में देखने को नहीं मिलते हैं। अर्थात् भोगवाद, वैश्विक समाज, संतोष, अच्छे शिक्षकों का महत्व है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न मिटै भवसंकट, दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि में न बिराग, न ज्ञान कहूँ, सब लागत फोकट झूँठ जटो।
नट ज्यों जनि पेट-कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ, रसना निसिबासर राम रटो।।

संदर्भ एवं प्रसंग :- व्याख्येय पंक्तियाँ भक्तिकाल के समन्वय के सम्राट तुलसी की "कवितावली" से ली गई हैं। इनमें तुलसी दास जी राम की भक्ति की महिमा का वर्णन करते हैं।

व्याख्या :- इन पंक्तियों में कहते हैं कि भवसंकट खत्म नहीं होते, तप भी कठिन एवं तीर्थ पर भी नहीं जा सकते। ज्ञान, प्रेम, तीर्थ सब फालतू व झूठे लगते हैं यदि सदा सुख चाहिये तो राम नाम को रटो अर्थात् राम की भक्ति के महत्व को स्थापित करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इन पंक्तियों के माध्यम से वर्तमान समय की विलासिता जीवन शैली, पाश्चात्यकरण, आधुनिक अंधानुकरण एवं पाखंड के मध्य विरोधाभास देख सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में प्रेम, दया, भावना जैसे मूल्यों के माध्यम से ही खुश रह सकता है।

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा - ब्रज का प्रयोग हुआ है
2. प्रतीकों का प्रयोग हुआ है
3. उपमा एवं अलंकारों का प्रयोग
4. कवित्त एवं सवैया छंद का प्रयोग।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

संदर्भ एवं प्रसंग :- यह पद्यांश "कुरुक्षेत्र (1945) से उद्धृत है। इसमें राष्ट्रकवि दिनकर युद्ध के महत्व एवं प्रासंगिकता के संबंध में बताते है। यह पंक्तियाँ भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते हैं।

भाव सौंदर्य :- भीष्म कहते हैं कि न्याय को चुराने वाला ही रण को बुलाता है। अपने अधिकारों के लिए लड़ना पाप नहीं है। नरक उनको मिलता है जो पाप को स्वीकारते हैं। रण में ललकारते हैं वे नरक के भागी नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

युधिष्ठिर उपर्युक्त पद्यांश में युद्ध को समाज के लिए, व्यापक उद्देश्य के लिए स्वीकार करते हैं। इसमें न्याय के महत्व के लिए युद्ध उचित ठहराते हैं।

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है।
   उदा. - स्वत्व
2. भाषा में गेयात्मकता है।
3. 'ओज' का प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता :- वर्तमान समय में संरक्षणवाद, रूस-यूक्रेन युद्ध, आतंकवाद एवं उग्रवाद जैसे वैश्विक परिस्थितियों में दिनकर हमें प्रेरित करते हैं -

" रे रोक युधिष्ठिर कौन यहाँ
जाने दो उनको स्वर्ग धीर
लौटा दो अर्जुन भीम वीर।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नहिं परागु, नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यौं, आगै कौन हवाल॥

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ बिहारी सतसई से ली गई हैं। इनमें रीतिकाल के कवि बिहारी राजा का पथ प्रदर्शन का कार्य करते हैं।

व्याख्या :- इन पंक्तियों के माध्यम से कहते हैं कि अभी तो यौवन का विकास भी नहीं हुआ। अभी इस तरह प्रेम में लिप्त हो, आगे क्या हाल होगा। अर्थात् राजा किशोरी के प्रेम में व्यस्त है और जनता की समस्याओं से अवगत नहीं है। जब युवती की यौवन का प्रारंभ होने पर राजा का क्या हाल होगा।

शिल्प सौंदर्य :-

① ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. कविता राज दरबार में अपने श्रेष्ठ अलंकारिकता के साथ है।

3. प्रतीकों का प्रयोग हुआ है

4. यमक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता :- इन पंक्तियों से वर्तमान समय में लिप्त भोगवाद में युवा पीढ़ी, नशे की प्रवृत्ति आदि के संबंध में मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

संदर्भ /प्रसंग :- व्याख्येय पद्यांश छायावाद के प्रतिनिधि रचनाकार निराला की कविता "राम की शक्ति पूजा" से उद्धृत है। इन पंक्तियों में युद्ध के बाद अपने शिविर में लौटते हुए राम की स्थिति का वर्णन है।

भाव सौंदर्य :- राम की शक्ति पूजा में निराला कहते हैं कि सेना के सबसे आगे राम चल रहे हैं उनके धनुष, तीर आदि अस्त व्यस्त हैं। उनके कंधों पर बाल फैले हुए हैं। उनके बालों का दृश्य ऐसे बन रहा है जैसे कि पर्वत पर अंधकार फैला हो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आशा की किरण कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे हैं।

शिल्प सौंदर्य :-

1. तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है
   वज्र, हृद
2. खड़ी बोली हिन्दी काव्य की भाषा की संपूर्ण अभिव्यक्ति करती है।
3. प्रतीकों का प्रयोग हुआ है
   उदा. - तारायें, नैशान्धकार
4. भाषा में समास गुण का प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता :- इन पंक्तियों में वर्तमान पीढ़ी की आत्ममुग्धता, आत्महत्या जैसी निराशा की से निकलने की प्रेरणा भी देती हैं —

"एक और मन रहा राम का।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'उपालंभ के क्षेत्र में जो अद्‌भुत सफलता सूर को मिली है, शेष कवि उसके आसपास भी नहीं पहुँच सके हैं।'-क्या सूर का काव्य इस कथन की पुष्टि करता है? विश्लेषणात्मक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बिहारी' की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) कबीर की भक्ति-भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर निर्गुण भक्ति काव्य धारा से संबंधित है। कबीर दास जी ~~काव्य~~ रचनाओं में समाज की समस्याओं को समग्रता से देखा जा सकता है।

कबीर की भक्ति भावना :

1. कबीर निर्गुण भक्ति के महत्व को स्थापित करते हैं। कबीर दास जी राम शब्द के माध्यम से रामत्व के गुणों की अभिव्यक्ति करते हैं —

"दशरथ सुत तिहुं लोक बखाना
राम नाम का मरम न जाना।"

2. कबीर के यहाँ दास्य भक्ति के उदाहरण भी देखने को मिलते हैं —

"राम नाम की जेवड़ी जित खेंचू तित जाऊं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. कबीर दास जी ~~साधना~~ नाथों के हठयोग को नकारते हैं और सूफियों के रहस्यवाद को स्वीकारते है अर्थात् प्रेम के महत्व को स्थापित करते हैं—

"गगना पवना दोनों बिनसैं कहाँ गया जोग तुम्हारा।"

"प्रेम न बाड़ी उपजै प्रेम न हाट बिकाय राजा प्रजा जेहि रुचै सीस देय लेजाय।"

4. ज्ञान आधारित समाज की स्थापना की बात करते हैं इसके लिए धार्मिक पाखंड को नकारते हैं—

"कांकर पाथर जोर कै, मस्जिद लियो चुनाय . . . क्या बहरा ~~खु~~ हुआ खुदाय।"

अत: कबीर दास जी की भक्ति भावना सिद्धो - नाथ की परंपरा से प्रभावित है। कबीर के यहाँ निर्गुण भक्ति ~~का~~. को स्वीकार किया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कामायनी के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामायनी (1936) जयशंकर प्रसाद की काव्यात्मक उपलब्धि है। प्रसाद ने खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य लिखा है।

महाकाव्यत्व रामस्वरूप चतुर्वेदी के आधुनिक मानदंडों पर खरा उतरता है।

1. उदात्त कथानक :- कामायनी का कथानक लोक कल्याण के भाव के साथ है। इसमें संपूर्ण विश्व की मंगल के कामना की है -

" औरों को हँसते देखो मनु
हँसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सबको सुखी बनाओ।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. उदात्त चरित्र :- कामायनी में श्रद्धा का चरित्र उदात्त है। श्रद्धा मनु को प्रेरित करती है। इसमें मानव कल्याण, प्रकृति का कल्याण का भाव समाहित है। मनु में कुछ कमियाँ हैं। यह कहानी सभ्यता के विकास के प्रारंभ की है। अर्थात् मनु का चरित्र भी संपूर्णता के साथ है।

3. उदात्त भाव :- यह आनंदवाद के भाव के साथ है। इसमें ज्ञान, क्रिया एवं इच्छा के समन्वय पर बल दिया है।

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
× × ×
यह विडंबना है जीवन की।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. उदात्त शिल्प :- भाषा के स्तर पर खड़ी बोली हिन्दी संपूर्ण सौंदर्यता के साथ है। इसमें बिंब, प्रतीकों का प्रयोग भी बेहतर हुआ है।

समग्रतः हम कह सकते हैं कि कामायनी चरित मूलक महाकाव्य है। यदि हम इसकी तुलना रामचरित मानस से करते हैं तो कुछ कमजोर नजर आता है। लेकिन यह आधुनिक मानदंडों पर महाकाव्य की कसौटियों को पूरा करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या करते हैं। क्या निराला की यह विशेषता राम की शक्तिपूजा में भी दृष्टिगत होती है? विवेचन करें। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला प्रयोगधर्मी चेतना के कवि हैं। निराला की रचनाओं में वैविध्य देखने को मिलता है। सरोज स्मृति, वह तोड़ती पत्थर, जूही की कली उनके रचना संसार के अमूल्य रत्न हैं।

राम की शक्ति पूजा (1936) अपने समय की समग्र अभिव्यक्ति करती है। यह निराला के जीवन, गांधी के स्वतंत्रता संघर्ष, सत - असत आदि को व्यक्त करती है।

आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन :

1. राम को सच्चे साधक एवं शक्ति के मौलिक चिंतन करते हुए दिखाया है। यह चिंतन स्वयं निराला के जीवन, गांधी के दो आंदोलन विफल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हो गये आदि की संपूर्णता के साथ व्यक्त करता है। निराला कहते हैं -

"लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा स्वार्थ समर।"

"दुख ही जीवन की कथा रही।"

2. प्रसंग का विस्तार :- शक्ति की खोज करते समय विभीषण के विचारों पर ध्यान नहीं दिया है जबकि जामवंत की सलाह को शिरोधार्य किया है -

"अराधन का दो दृढ़ अराधन से उत्तर।"

3. प्रसंग की व्याख्या :- यह प्रसंग नारी मुक्ति के रूप / प्रतीक सीता, स्वतंत्रता की प्राप्ति आदि को अभिव्यक्त करता है। इनको प्राप्ति के लिए सर्वांग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अर्पण का भाव भी मन में रखता है –

" माँ कहती थी मुझे राजीवनयन।"

मानवीय संघर्ष की प्रतिष्ठा को स्थापित करती है। मानव का ईश्वरीकरण के स्थान पर ईश्वर का मानवीकरण करके आधुनिकता को समेटती है –

" एक और मन रहा राम का जो नहीं जानता दैन्य, नहीं विनय।"

समग्रतः निराला का रचना संसार प्रसंग के अनुसार महत्व की पराकाष्ठा को स्थापित करता है। राम की शक्ति पूजा सर्वश्रेष्ठता को धारण करती है। यह कविता स्वतंत्रता प्राप्त करती है शक्ति की मौलिक कल्पना के साथ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालिये। 20

कबीर भक्तिकाल के प्रतिनिधि ~~रच~~ संत हैं। इनकी भावना निर्गुण संत काव्य धारा से संबंधित है।

कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद :-

1. कबीर दास जी सिद्धो – नाथों की परंपरा से प्रभावित होने के कारण पहले ~~साधनात्मक~~ साधनात्मक रहस्यवाद को स्वीकार करते हैं।

2. साधनात्मक रहस्यवाद से प्रभावित होकर उलटबाँसियों की रचना करते हैं –

" नैय्या बीच नदियाँ डूबी जाय।

कबीर के यहाँ अनुभव से रचना संसार विकसित हुआ है और प्रत्येक महान कवि अनुभव के आधार पर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थापित तथ्यों पर प्रश्न चिह्न लगाता है।

"गगना पवना दोनों बिनसैं
कहाँ गया जोग तुम्हारा।"

इसके बाद सूफियों के रहस्यवाद को स्वीकार करते हैं:-

1. प्रेम को महत्व के रूप में स्वीकार करते हैं—

"प्रेम न बाड़ी उपजै
प्रेम न हाट बिकाय
राजा प्रजा जेहि रुचै
सीस देहि लै जाय।"

2. समाज में जीवन मूल्यों को स्थापित करते हैं। ज्ञान आधारित समाज की स्थापना का प्रयास करते हैं-

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"जाति पाति पूछौ न साधु की
पूछ लीजियो ज्ञान।"

समग्रतः कबीर के यहाँ शुरुआत में सिद्धों-नाथों की परंपरा का साधनात्मक रहस्यवाद से अधिक प्रभावित होते हैं। लेकिन ~~आपकी~~ अंत में सूफियों के रहस्यवाद को स्वीकार करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास की 'रामराज्य की परिकल्पना' पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोस्वामी तुलसीदास के यहाँ रामराज्य की परिकल्पना एक आदर्श व्यवस्था के रूप में की है। गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल के कवि हैं जो राजनीति और समाज की विषमता पर बात करते हैं। रामराज्य इनका यूटोपिया है।

रामराज्य की परिकल्पना :

① सभी विषमताओं एवं समस्याओं को समाप्त करते हैं:–

" दैहिक दैविक भौतिक तापा
राम राज्य कबहुँ नहीं व्यापा।

② गरीबी को सबसे बड़ा दुःख के रूप में मानते हैं:–

" दरिद्र सम दुख जग नाहिं
संत मिलन सुख जग नाहिं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(3) बेरोजगारी की समस्या को समाप्त करते हैं। तुलसी दास जी ने अकाल की समस्या का मूल कारण कलयुग की विशेषता को माना है।

"कलि बारहिं बार अकाल ...।"

(4) वेदों, शिक्षा एवं भूकिचोरों की समस्या को राम राज्य में समाप्त करते हैं। कलियुग का वर्णन करते हुए कहते हैं—

"वेद धर्म दूर गए
भूमि चोर भूप भए।"

(5) राम राज्य में ~~के~~ प्रजा की सेवा को राजा का कर्तव्य मानते हैं।

"नृप अवस नरक अधिकारी।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(6) ज्ञान आधारित समाज एवं जाति समस्या का समाधान करते हैं—

"मांग कै खाइबो
मस्जिद में साइबो
लेबे को एक न देबे न...।"

(7) राम राज्य में कर्म के महत्व को स्थापित करते हैं—

"कर्म प्रधान विश्व करि राखा।"

समग्रतः तुलसी दास जी भक्ति काल में सभी समस्याओं का समाधान भक्ति के माध्यम से खोजते हैं। आधुनिक युग में गांधी रामराज्य की स्थापना सर्वोदय, बुनियादी शिक्षा, सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'प्रगतिवादी जीवनमूल्यों में आस्था रखते हुए भी मुक्तिबोध 'लकीर के फकीर' नहीं हैं और अनुभवजन्य यथार्थ पर अधिक यकीन रखते हैं।' ब्रह्मराक्षस कविता के संदर्भ में इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध प्रगतिवाद से प्रभावित हैं लेकिन मार्क्स की अविकल प्रस्तुति नहीं करते हैं। मुक्तिबोध की रचना ब्रह्मराक्षस एवं अंधेरे में मुक्तिबोध की सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ है।

ब्रह्मराक्षस में अनुभवजन्य यथार्थ :-

1. व्यक्ति के स्तर वर्ग के अलावा व्यक्तिगत चेतना की खोज करते हैं। दशमलव के स्तर पर व्यक्तिगत चेतना को स्वीकार करते हैं।

2. मध्यवर्ग वर्गीय हितों के स्थान पर अपने हितों को वरीयता देता है जबकि मार्क्स वर्गीय हितों की बात करते हैं।

"करता रहा वह अपना गणित।"

3. व्यक्ति की छटपटाहट को दिखाने का प्रयास करते हैं:-

" बाँह छाती मुँह छपाछप
फिर भी मैल।

4. शिल्प के स्तर पर भी मुक्तिबोध ने विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग किया है जबकि प्रगतिवादी सीधे-साधे ~~कथ्य~~ पर बल देते हैं। मुक्तिबोध कहते हैं:-

"कथानक के स्तर पर जाँच करो
न कि कथ्य के स्तर पर।"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. मैं और यह के संघर्ष को दिखाने का प्रयास करता है।

अत: मुक्तिबोध की प्रगतिवाद में विश्वास रखते हैं लेकिन लकीर के फकीर होने के स्थान पर अनुभव के साथ परिवर्तन करते हैं। यह परिवर्तन कथानक व कथ्य दोनों के स्तर पर देखने को मिलता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि केसरि-आड़ गुरु।
इक नारी लहि संगु, रसमम किय लोचन-जगत॥

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश रीतिकाल के प्रतिनिधि रचनाकार बिहारी की रचना बिहारी सतसई से लिया गया है। इन पंक्तियों में प्रेम का वर्णन है।

व्याख्या :- बिहारी कहते हैं कि ~~मंगल~~, चंद्रमा के समान मुख है, एक नारी साथ है। प्रेम के माध्यम से लोचन जगत का भाव है।

अर्थात इन पंक्तियों में शरीरी प्रेम का वर्णन करते हैं। यह प्रेम परलज है जिसमें शरारिक सुख को अनुभव के माध्यम से महसूस किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिल्प सौंदर्य :

1. ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है।
2. प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्ति की गई है।
   उदा. मंगलु, बिंदु
3. पतनज प्रेम की अभिव्यक्ति।
4. अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता : वर्तमान समय में मनोरंजन के लिए कविता जैसे सात्विक माध्यमों का अभाव देखने को मिलता है। आधुनिक कवि कहता है —

" खुले - खुले बदन पर
साबुन का झाग हो गई है औरत
पान पराग हो गई है औरत।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ / प्रसंग : उपर्युक्त पद्यांश जायसी की रचना पद्मावत के नागमती वियोग खंड से लिया गया है। आचार्य शुक्ल ने भी नागमती के विरह को हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ माना है।

व्याख्या : नागमती रत्नसेन के न लौटने से दुःखी है। भादौं के महीने को दूभर पाती है। अंधियारी रात को भी और परेशानी का कारण मानती है। विरह रूपी नाग बार-बार डँस रहा है। उसकी रत्नसेन के विरह में छाती फटने को हो रही है। उसकी आँखे भी भादवे के समान बार-बार आँसू से बहती है। आँखो से आँसू की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

तीव्र धारा बहती है पूरब जो लगाने वाला है लेकिन मेरे प्रियतम की आने की कोई उम्मीद नहीं है

शिल्प सौंदर्य :-

1. बारह मासा के माध्यम से विरह का वर्णन किया गया है
2. प्रतीकों का प्रयोग
   उदा. सेज नाग भै धै धै डसा।"
3. अवधी भाषा अपने मिठास के साथ है

*. प्रासंगिकता :-

1. पारिस्थितिक प्रेम का महत्व
2. लोक भाषा का महत्व
3. संस्कृति का महत्व
4. सामान्य नारी की विरह भावना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश सुंदरकांड से उद्धृत है। इसमें तुलसीदास जी ने विभीषण के माध्यम से रावण को नीति का संदेश कहलवाया है

* व्याख्या :- ~~विभीषण कहते हैं~~ अवसर पाकर विभीषण आता है। भ्राता के चरणों में सीस झुकाता है। अपने आसन पर बैठता है। जो आप मेरे से पूछोगे तो मेरे मति के अनुसार आप कल्याण चाहते हो तो सीता माता को वापस लौटा दो। काम, क्रोध, घमंड, लोभ आदि नरक के मार्ग हैं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अर्थात् तुलसी दास जी ने सुंदरकांड के माध्यम से नीति परक बातों को कहा है

शिल्प सौंदर्य :-

1. तत्समीपन के साथ अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।

2. उपमाओं का प्रयोग

उदा. तजउ चउथि के चंद कि नाई।

प्रासंगिकता :- वर्तमान समय में भोग की मानसिकता को दशा बताते हुए इसमें एक नारी व्रत के महत्व को स्थापित करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश "निराला" की कविता "कुकुरमुत्ता" से उद्धृत है। इन पंक्तियों में कुकुरमुत्ता की विशेषताओं को बताते हैं

भाव सौंदर्य :- इसमें निराला कहते हैं- हाथ जिसके तू लगा, वो तुरंत पैर सर रखकर पीछे को भगा। औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर, तबेले के टट्टू जैसे तोड़कर। तू अमीर आदमियों के लिए अधिक प्रिय है।

अर्थात् कविता के केंद्र में निराला सामान्य प्रतीकों को लेकर आते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा देशज शब्दों से युक्त है।
   उदा. टट्टू, तबेले
2. प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।
3. उपमाओं का प्रयोग।

प्रासंगिकता :- इन पंक्तियों में निराला प्रगतिवाद के प्रतीकों को नकारते हैं। निराला प्रगतिशील चेतना संबंधित हैं लेकिन अंधानुकरण को नहीं स्वीकारते नही है। नागार्जुन भी कहते हैं—

"क्या है दक्षिण क्या है वाम
जनता को है रोटी से काम।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

संदर्भ/प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ अज्ञेय की रचना असाध्य वीणा (1963) से उद्धृत है। राजा ने वीणा की विशेषताओं का बताया है।

भाव सौंदर्य :- राजा कहते हैं कि इस ~~यह~~ वीणा को सभी जाने-माने अहंकार युक्त कलाकारो ने साधने का प्रयास किया है लेकिन कोई ज्ञानी गुणी इसे साध न सका है और सबकी विद्या एवं घमंड खत्म हो गया। अब यह वीणा असाध्य के नाम से ही ख्यात हुई है। पर मुझे अब भी विश्वास है वज्रकीर्ति का तप

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

व्यर्थ नहीं था। जब सच्चा साधक इसे साधने का प्रयास करेगा तब वीणा बोलेगी अवश्य।

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है।
   उदा. – असाध्य
2. संश्लिष्ट बिंबों का प्रयोग हुआ है।
3. उपमा एवं अलंकारों का प्रयोग हुआ है।
   उदा. असाध्य वीणा

प्रासंगिकता : साधक के गुणों को बताया है। वर्तमान समय में युवा पीढ़ी को सच्ची साधना करने की आवश्यकता है जिससे राष्ट्र व समाज को समावेशी बनाया जा सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी की काव्य-वस्तु का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूर का भ्रमरगीत नागर-संस्कृति के बरक्श लोक-संस्कृति की प्रतिष्ठा करता है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मुक्तिबोध परंपराभंजक अनगढ़ काव्यभाषा के कवि हैं।' 'ब्रह्मराक्षस' कविता के आधार पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

/

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःख से जितना सरोकार कबीर का है, उतना भक्तिकाल के किसी अन्य कवि का नहीं।" इस कथन की मीमांसा कीजिये। 20

कबीर जनता के कवि है। भक्तिकाल में सर्वाधिक वेदना, दुख एवं परंपरा को तोड़ने की प्रेरणा कबीर के यहाँ देखने को मिलती है।

पीडित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःख को कबीर ने अपनी रचनाओं को केन्द्र में शामिल किया है-

① जाति आधारित शोषण के खिलाफ अवाज उठाने वाले पहले संत है। कबीर कहते हैं-
जाति पाति पूछो न साधु की
पूछ लीजियो ज्ञान।"

अर्थात आधुनिक एवं ज्ञान आधारित समाज की मांग करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. धार्मिक पाखंड को कविता में जगह देते हैं। दोनों धर्मों की वास्तविकता को बताते है—

"पाहन पूजै हरि मिलै . . . ।"

"कांकर पाथर जोड़कर . . . ।"

3. लोक भाषा के स्तर पर कबीर जनता की अभिव्यक्ति को स्थापित करते हैं—

"संस्कृत है कूप जल
भाखा बहता नीर।"

4. कबीर दास जी वेदना, दुःख के सर्वोच्च स्तर पर पहुँचते है और कहते है—

" दुखिया दास कबीर है
जागै अरु रोवै

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सुखिया सब संसार है
खावै अरु सोवै।"

5. प्रेम को मूल्य के रूप में स्थापित करते है।

"प्रेम न बाडी उपजै . . .।"

(6) राम के गुणों, गुरु के महत्व को स्थापित करते है।

कबीर हिन्दी साहित्य की परंपरा के पहले कवि है जहाँ रोने के भाव है। यही भाव प्रेमचन्द, नागार्जुन के यहाँ भी देखने को मिलता है—

"रोता हूँ लिखता जाता हूँ।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भारत-भारती में निहित नवजागरण-चेतना पर प्रकाश डालिए। 15

भारत-भारती (1912) में राष्ट्र कवि गुप्त काल की क्रमिक अवस्था के अनुसार राष्ट्र गौरव, राष्ट्र की वर्तमान एवं भावी राष्ट्र के निर्माण की बात करते हैं।

भारत - भारत में नवजागरण की चेतना:

(1) इतिहास, वर्तमान एवं भविष्य की स्थिति पर विचार करती है। कविता कहती है –

"हम कौन थे, क्या हो गए क्यों होंगे अभी
आओ मिलकर विचारें सभी।"

(2) इतिहास में गौरव की भावना के रूप में देखते हैं। गुप्त जी कहते हैं आर्य जाति का इतिहास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

गौरवपूर्ण है -

"सभी को हमीं ने ... ज्ञान शिक्षा दान की।"

(3) भाषा के स्तर पर नवजागरण की चिंता देखने को मिलती है -

"है राष्ट्रभाषा भी अभी कोई नहीं"

(4) विज्ञान को सीखने की चाह -

"बैलून की रचना करके दिखलाइये।"

(5) आर्थिक पिछड़ेपन की समस्या का कारण पहचानते है -

"पेट पीठ से मिलकर एक है।"

समग्रतः राजा राम मोहन राय, भारतेन्दु से प्रारंभ हुआ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

नवजागरण की प्रक्रिया गुप्त जी के यहाँ विकासशील अवस्था में है यह बाद में छायावाद में पूर्णता की स्थिति को प्राप्त करता है -

"हिमाद्रि तुंग शृंग से
स्वतंत्रता पुकारती"

भारत-भारती रचना हिंदी की बिंदी है और यह नवजागरण की अभिव्यक्ति के कारण ही गौरव प्राप्त करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन प्रगतिवाद के अग्रदूत हैं। नागार्जुन के रचना संसार में अनुभव, जनता की वेदना, समस्याओं और सामान्य जनजीवन देखने को मिलता है।

① नागार्जुन वेदना को स्वीकार करते हुए। कालीदास के रचना संसार को बताते हैं—

" कालीदास सच-सच बतलाना
रोया यक्ष की तुम रोये थे।

② अकाल और उसके बाद में प्रकृति पशु-पक्षी आदि का मानवीकरण करते हैं।

" कानी कुतिया सोई उसके पास।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

③ हरिजन गाथा कविता में नागार्जुन हरिजनों की समस्या को जीते हैं और संपूर्ण क्रांति का अलख जगाते हैं—

" दलित माँओं के सब बच्चे
बागी होंगे।

④ जनता की समस्याओं को संपूर्णता के साथ उठाते हैं और जनता के पक्ष में खड़े होकर कहते हैं—

"जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊँ
~~साफ कहूँगा क्यों~~
जन कवि हूँ साफ कहूँगा क्यों हकलाऊँ।"

⑤ कबीर के बाद हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक वेदना एवं आँसू नागार्जुन के यहाँ देखने को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मिलती है -

"रोता हूँ लिखता जाता हूँ
कवि को बेकाबू पाता हूँ।"

समग्रत: नागार्जुन की रचनाओं का समग्र विश्लेषण जनता की सहज भावनाओं, समस्याओं, लोक जनजीवन एवं दुःखों की सहज, समग्र एवं संपूर्ण अभिव्यक्ति है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation